IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पर्यावरणीय मूल्यपरक समस्याओं के त्वरित व दीर्घकालीन समाधान में महात्मा गांधी के विचारों का पुनर्मुल्यांकन

डॉ. वर्षा सागोरकर

सह प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान

शास. हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल

संक्षेपिका –

किसी भी समाज के इतिहास में ऐसे अवसर भी आते हैं जब वह समाज अपने आपको चहुँ ओर से विपराओं से घिरा पाता है या अनुभव करता है किन्तु संकट और समस्या ही आत्ममंथन का द्वार खोलती है एवं मार्ग भी प्रषस्त करती है। ऐसा ही समय अतीत की खोज, उसका पुनर्निमाण वर्तमान का विष्लेषण और आगत की भूमि या रूपरेखा तैयार करता है। भारत की सांस्कृतिक चेतना में ऐसे दो अवसर आये जब भारतीय समाज को अपनी अस्मिता से संघर्ष करना पड़ा। प्रथम मध्यकाल में इस्लाम का आगमन जिसने भारत में सांस्कृतिक संकट को जन्म दिया और यही से भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात हुआ इसके समाधान हेतु निर्गण संतो ने (तुलसीदास आदि) समतामूलक समाज के साथ–साथ सुराज एवं रामराज्य का विकल्प प्रस्तुत किया। द्वितीय संकट अंग्रेजो के आगमन एवं उनके सत्ताधीन होने के साथ उत्पन्न हुआ। पराधीन भारत अपना सब कुछ विस्मृत कर चुका था ऐसे समय महात्मा गांधी ने भारतीय चिन्तन की खोयी अस्मिता व पुनर्स्थापित करने हेतु भारतीय चिन्तन की सनातनी परमपरा आहम सात करते हुए स्वराज्य की अवधारणा प्रस्तुत की, किन्तु स्वराज्य क्या है? इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है जानना अत्यन्त आवष्यक है। वैष्णव जन तो तेने कहीए पीड़ पराई जाने रे (नरसी मेहता) इसी कारण से उपजा है गांधी का स्वराज्य क्योंकि पराधीनता कहुँ सुख नाही अर्थात पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में नहीं मिलता अर्थात् सुख चाहिए तो पराधीनता से स्वतन्त्रता चाहिए। हम मुक्त कैसे हो? व स्वराज्य कैसे प्राप्त करें इसका उत्तर गांधी गांव की माटी में खोजा स्वदेष में खोजते हैं गांधी के लिए स्वदेषी भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का पुनरावर्तन है। व्यक्ति के लिए जहॉ यह आत्मलाभ है वही ग्राम के लिए स्वावलंबन एवं भारत के लिए परंतत्रता से मुक्ति। इन सभी का समुच्चय है स्वराज्य। गांधी के लिए राज्य का प्रष्न वस्तुतः दो सभ्यताओं के संघर्ष का प्रष्न था ग्राम आचरण की सभ्यता और द्वितीय आसुरी सभ्यता। के सम्मुख संकट दो मुंहा था प्रथम तो औपनिवेषिकता फलस्वरूप प्राकृतिक संम्पदा के विदोहन से उत्पन्न आर्थिक विपन्नता और द्वितीय आधुनिकता के फलस्वरूप आसुरी सभ्यता से उत्पन्न जीवन मूल्य और इन सभी मात्र एक ही उत्तर है स्वदेषी'

key world &

स्वदेषी एक विचार, नैतिक नियम, मूल्य संघर्ष और स्वकर्म है जिसके अन्तर्गत सर्वोदय एवं सत्याग्रह का समाहार हो जाता है। गांधी ने यह प्रेरणा भगवत गीता की। जिसमें कहा गया है कि "स्वधर्म पालन का कारण श्रेयस्कर है पर धर्म भयावह है। यह तथ्य स्वंय समान रूप से लागू होती है क्योंकि स्वदेषी निकाय के प्रति स्वधर्म है। स्वदेषी व स्वराज्य की अवधारणा गांधी के सत्य एवं अंहिसा की अवधारणा का व्यावहारिकता का आदर्ष भारत का सदैव ही मूलमंत्र रहा है सत्य की शाखाएं असहयोग सविनय अवज्ञा, तपस्या है। इस हिंसामय जगत में उन्होंने अहिंसा का काला वे ऋषि, न्यूटन से कही महान अविष्कार शास्त्रों का उपयोग भी जानते थे किन्तु उन्होनें के अपनी मुक्ति का मार्ग हिंसा से बल्कि